Raga of the Month April 2023   Raga Jogeshwari(Type II) राग जोगेश्वरी (प्रकार २)

राग जोगेश्वरी (प्रकार २) यह एक अप्रचलित राग है। अभिनव गीत मंजरी के तीसरे भागमे इस रागका संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। इस रागमें रागेश्री रागका प्रधान अंग रखते हुए कुछ जयजयवंती रागकी छाया दिखायी देती है, मगर इस रागमे कोमल गंधारका प्रयोग नहीं किया जाता है । इस रागकी उत्पत्ति खमाज थाटसे हुई है। रागमे दोनों निषाद और बाकी स्वर शुद्ध है। इस रागका सृजन आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। । इस रागका वादी षड्ज और संवादी मध्यम है। यह राग रात्रिके प्रथम प्रहरमे गाया जाता है।

पंडित रविशंकरजीनेभी जोगेश्वरी नामके रागका निर्माण किया हुआ है, मगर उसका स्वरूप अलग है। उस रागमे रागेश्री और जोग इन रागोंका मिश्रण किया हुआ है। इस संकेत स्थलमें उस रागको जोगेश्वरीका पहला प्रकार माना है।

किताबमे दिया हुआ स्वर विस्तार नीचे दिया हुआ है।

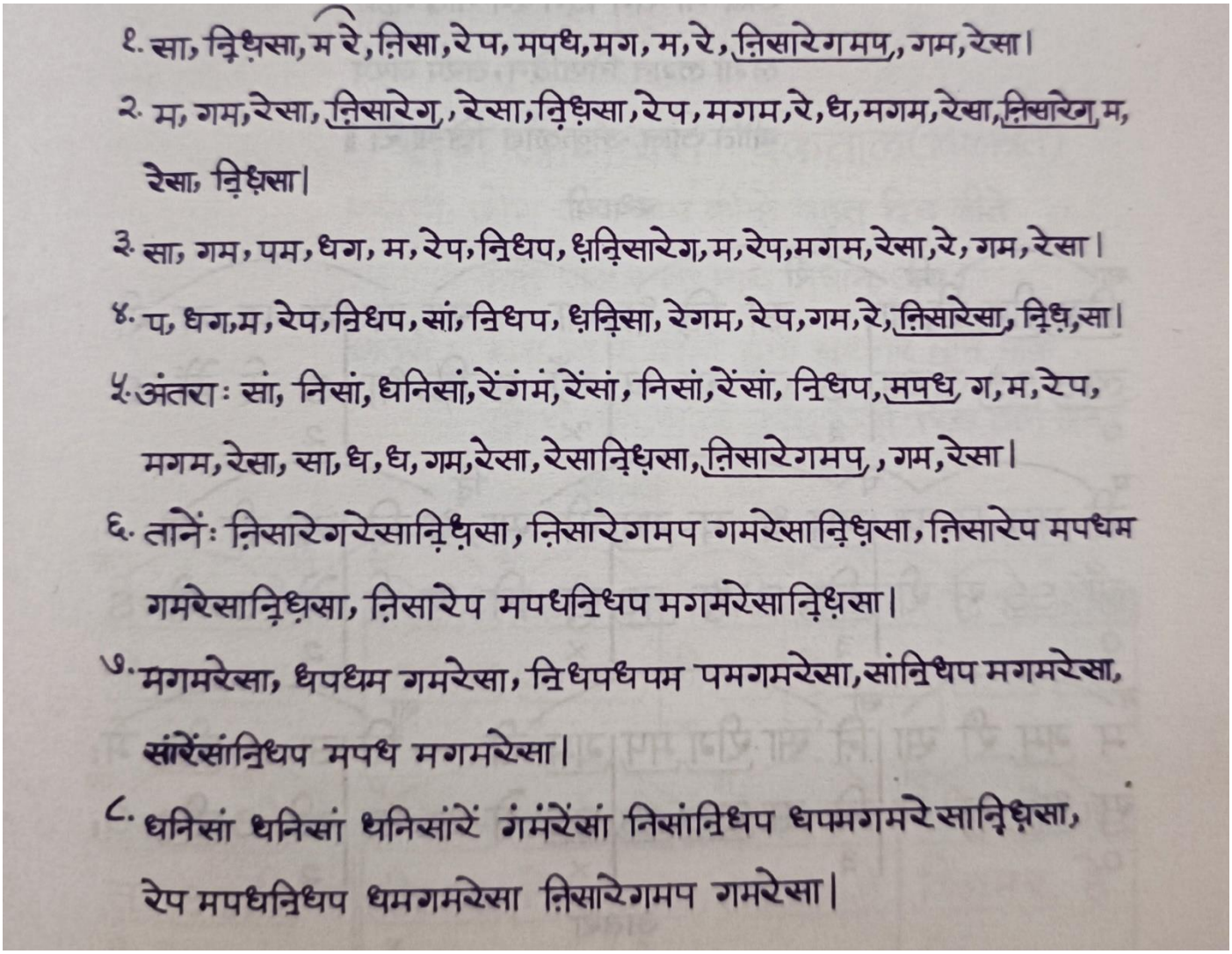

१. सा, नि़ध़सा, म रे, नि़सा, रेप, मपध, मग, म, रे, नि़सारेगमप,, गम, रेसा।

२. म, गम, रेसा, नि़सारेग, रेसा, नि़ध़सा, रेप, मगम, रे, ध, मगम, रेसा, नि़सारेग, म, रेसा, नि़ध़सा।

३. सा, गम, पम, धग, म, रेप, निधप, ध़नि़सारेग, म, रेप, मगम, रेसा, रे, गम, रेसा।

४. प, धग, म, रेप, निधप, सां, निधप, ध़नि़सा, रेगम, रेप, गम, रे, नि़सारेसा, नि़ध़, सा।

५. अंतरा : सां, निसां, धनिसां, रेंगंमं, रेंसां, निसां, रेंसां, निधप, मपध, ग, म, रेप, मगम, रेसा, सा, ध, ध, गम, रेसा, रेसानि़ध़सा, नि़सारेगमप, , गम, रेसा।

६. तानें : नि़सारेगरेसानि़ध़सा, नि़सारेगमप गमरेसानि़ध़सा, नि़सारेप मपधम गमरेसानि़ध़सा, नि़सारेप मपधनिधप मगमरेसानि़ध़सा।

७. मगमरेसा, धपधम गमरेसा, निधपधपम पमगमरेसा, सांनिधप मगमरेसा, सांरेंसांनिधप मपध मगमरेसा।

८. धनिसां धनिसां धनिसांरें गंमंरेंसां निसांनिधप धपमगमरेसानि़ध़सा, रेप मपधनिधप धमगमरेसा नि़सारेगमप गमरेसा।

आजके ऑडियोमें हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित विलम्बित और द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजीने गायी हुई है।

संदर्भ : "अभिनव गीत मंजरी" भाग ३.
आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले, श्री अजय गिंडे.

१- ४ -२०२३

Link to the list of 140+ Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx